भारतीय सिक्का-ढलाई: प्राचीन से मध्यकालीन युग तक

प्रिलिम्स के लिये:

सिंधु घाटी की मुहरें, पंच-चिह्नित सिक्के, इंडो-ग्रीक, शक सिक्के, कुषाण सिक्के, सातवाहन, विजयनगर साम्राज्य, मुगल साम्राज्य के सिक्के, भारत में सिक्का प्रणाली, प्राचीन और आधुनिक भारत के सिक्के, **सिक्का अधिनियम, 2011**

मुख्य परीक्षा के लिये:

भारत में सिक्के प्रणाली का विकास, प्राचीन और आधुनिक भारत की सिक्का प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ

प्राचीन भारत में सिक्कों का इतिहास क्या है?

- **सिंधु घाटी सभ्यता की मुहरें:**
  - मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की सिंधु घाटी सभ्यता **2500 ईसा पूर्व और 1750 ईसा पूर्व** के बीच की है। हालाँकि इस बात पर विद्वानों में मतभेद है कि पुरातात्विक स्थलों से प्राप्त मुहरें वास्तव में सिक्के थीं या नहीं।
- **आहत सिक्के:**
- **के विषय में:**
  - **ये 7वीं-6वीं शताब्दी ईसा पूर्व** और **पहली शताब्दी ईस्वी** के बीच जारी किये गए सबसे पुराने ज्ञात सिक्के हैं।
  - इन सिक्कों का उल्लेख प्राचीन संस्कृत ग्रंथों जैसे- मनुस्मृति और पाणिनि की अष्टाध्यायी के साथ-साथ बौद्ध जातक कथाओं में भी मिलता है ।
- **विशेषताएँ और लक्षण:**
- **इन सिक्कों का निर्माण चाँदी के सिक्कों पर अलग-अलग छिद्रों का उपयोग करके विभिन्न प्रतीकों को अंकित करके किया गया था।**

- वे मुख्य रूप से चाँदी और ताँबे से बने होते थे, हालाँकि प्राचीन ग्रंथों में सोने के सिक्कों का भी उल्लेख है, लेकिन इन सिक्कों पर तारीखों या राजाओं के नाम अंकित नहीं थे।

- इनमें विभिन्न प्रकार के प्रतीक शामिल होते थे, जो प्रायः धार्मिक, पौराणिक या खगोलीय महत्त्व रखते थे। सामान्य रूपांकनों में सूर्य, वृक्ष और धर्मचक्र शामिल थे; इसके अलावा, हाथी, बैल, घोड़ा, बाघ और गाय जैसे जीव-जंतु भी प्रमुख प्रतीक थे। साथ ही, पौराणिक कथाओं और गूढ़ अर्थों से जुड़े प्रतीकात्मक चित्रण भी इन रूपांकनों का अभिन्न हिस्सा थे।

//

Punch Marked Coin, Silver Bentbar

- भौगोलिक उपयोग:
    - ईसाई युग के आरंभ तक ये प्रतिक **उत्तरी भारत** में व्यापक रूप से प्रचलित थे ।
    - दक्षिण भारत में इनका प्रयोग तीन शताब्दियों तक जारी रहा। उत्तरी भारत में इन सिक्कों के पतन का श्रेय**हेलेनिस्टिक आक्रमणकारियों** द्वारा शुरू किये गए **यूनानी सिक्कों के प्रभाव को दिया जाता है**।
- **इंडो-यूनानी सिक्का ढलाई:**
- **इंडो-यूनानियों ने, जिन्होंने लगभग 189 ईसा पूर्व से 30 ईसा पूर्व तक शासन किया, भारतीय मुद्राशास्त्र पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाला। उन्होंने निम्नलिखित की शुरुआत की:**
    - **आवक्ष प्रतिमाएँ और शासक का चित्रण:** शासक का सिर या आवक्ष प्रतिमा उनके सिक्कों की केंद्रीय विशेषता बन गई।
    - **द्विभाषी किंवदंतियाँ:** सिक्कों पर एक ओर ग्रीक लिपि में तथा दूसरी ओर खरोष्ठी लिपि में अभिलेख अंकित थे।
    - **हेलेनिस्टिक प्रतीक:** सामान्य चित्रण में ज़ीउस, हेराक्लीज़, अपोलो और पल्लास एथेना जैसे यूनानी देवता शामिल थे।

टिप्पणी:

- **भारतीय संदर्भ में सिक्कों का सबसे पहला उल्लेख वेदों** में मिलता है**, जहाँ** धातुओं से बने सिक्कों के लिये **'निष्क'** शब्द का प्रयोग किया गया है।

प्राचीन भारत के राजवंशीय सिक्कों की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

- भारत में राजवंशीय सिक्का-ढलाई का संबंध **इंडो-यूनानियों, शक-पहलवों** और **कुषाणों से है,** जो लगभग **दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व** और **दूसरी शताब्दी ईस्वी के बीच का** है।
- **इंडो-यूनानी सिक्के:**
- **इंडो-यूनानी, जिन्होंने लगभग 189 ईसा पूर्व से 30 ईस्वी तक शासन किया, ने भारतीय मुद्राशास्त्र पर गहरा प्रभाव डाला।**
    - इनमें **हेलेनिस्टिक परंपराएँ शामिल हैं,** जिनमें यूनानी देवी-देवताओं और शासकों के चित्र दर्शाए गए हैं।
    - **इन सिक्कों पर अंकित यूनानी किंवदंतियाँ महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं, जो इंडो-यूनानी इतिहास के** पुनर्निर्माण के लिये प्राथमिक स्रोत हैं।

Indo-Greek Coins

- **प्रमुख विशेषताएँ:**
  - **आवक्ष प्रतिमाएँ और शासक का चित्रण:** शासक का सिर या आवक्ष प्रतिमा उनके सिक्कों की केंद्रीय विशेषता बन गई।
  - **द्विभाषी किंवदंतियाँ: सिक्कों पर** एक ओर **ग्रीक लिपि में तथा** दूसरी ओर **खरोष्ठी लिपि में** अभिलेख अंकित थे।
  - **हेलेनिस्टिक प्रतीक: सामान्य चित्रण में ज़ीउस, हेराक्लीज़, अपोलो** और **पल्लास एथेना** जैसे यूनानी देवता शामिल थे।
- **शक सिक्का:**
  - इसका संबंध पश्चिमी क्षत्रपों से है और ये सिक्के सबसे प्रारंभिक तिथि वाले सिक्कों में से हैं।
  - तिथियाँ शक संवत **के अनुसार अंकित की जाती हैं**, **जो 78 ई.** में शुरू हुआ और अब यह भारत का आधिकारिक कैलेंडर है।
- **कुषाण सिक्के:**
- **लगभग 100 ईसा पूर्व यूह-ची जनजाति की एक शाखा कुषाण, बैक्ट्रिया में शकों को परास्त कर अस्तित्व में आई।**
  - कुषाण सिक्के डिज़ाइन और प्रतीकात्मकता में क्रमिक भारतीयकरण को दर्शाते हैं, जिसमें भारतीय धार्मिक रूपांकनों पर अधिक ज़ोर दिया गया है जैसे- शिव, **बुद्ध** और शासकों के पैर पर पैर रखे हुए चित्रण, जो भारतीय कलात्मक परंपराओं को दर्शाते हैं।
  - वे **सांस्कृतिक सम्मिश्रण भी प्रदर्शित करते हैं, जिसमें यूनानी शिल्प कौशल, शाओनानो शाओ** जैसी ईरानी उपाधियाँ और **भारतीय धार्मिक और कलात्मक तत्त्वों का** सम्मिश्रण है, जो हेलेनिस्टिक, ईरानी और भारतीय परंपराओं के बीच सांस्कृतिक मध्यस्थ के रूप में कुषाणों की भूमिका को उजागर करता है।

- **सातवाहन सिक्के:**
  - सातवाहनों (**270 ईसा पूर्व से 227 ईसवी**), जिन्हें आंध्र के नाम से भी जाना जाता है, ने गोदावरी और कृष्णा नदियों के बीच के क्षेत्र पर शासन किया तथा पश्चिमी दक्कन एवं मध्य **भारत** पर अपना नियंत्रण बढ़ाया।
  - सातवाहन साम्राज्य के सिक्कों में मुख्य रूप से **सीसा का प्रयोग किया गया,** उसके बाद ताँबे **और पोटिन (चाँदी और ताँबे का एक मिश्र धातु) का प्रयोग किया गया** तथा चाँदी के सिक्के दुर्लभ थे। सातवाहन साम्राज्य के सिक्कों में मुख्य रूप से **सीसा (Lead) का प्रयोग** हुआ था। इन सिक्कों पर प्रायः **हाथी, शेर, बैल** और **घोड़े जैसे पशुओं के चित्र अंकित होते थे तथा** साथ में पहाड़ एवं वृक्ष जैसे **प्राकृतिक प्रतीक भी अंकित होते थे।**
  - चाँदी के सिक्कों पर क्षत्रप डिज़ाइन से प्रेरित **चित्र और द्विभाषी किंवदंतियाँ अंकित थीं।**
  - इसके अलावा, कई सिक्कों पर उज्जैन का प्रतीक एक तरफ चार वृत्तों वाला क्रॉस अंकित था। कलात्मक परिष्कार की कमी के बावजूद, सातवाहन सिक्के सातवाहन काल के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिये महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं।

Coins of the Satavahana

- **पश्चिमी क्षत्रप:**
  - शक मूल के पश्चिमी क्षत्रपों ने पहली शताब्दी से चौथी शताब्दी ई. तक मालवा, गुजरात और काठियावाड़ सहित **पश्चिमी भारत** के कुछ हिस्सों पर शासन किया।
  - उनके सिक्के ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि उन पर **शक युग (78 ई. से शुरू)** की तिथि अंकित है, जिससे **गुप्त वंश** के **चंद्रगुप्त द्वितीय** द्वारा उन्हें उखाड़ फेंकने तक के **इतिहास के पुनर्निर्माण** में सहायता मिली।
  - इन सिक्कों में आमतौर पर **एक ओर राजा का चित्र और दूसरी ओर बौद्ध चैत्य या स्तूप** अंकित होता था, जो सातवाहन सिक्कों से प्रेरित था।
  - **उनके सिक्कों पर यूनानी, ब्राह्मी** और कभी-कभी **खरोष्ठी** भाषा में अंकन होता था, **जिनमें 'बैल और पहाड़ी'** तथा **'हाथी और पहाड़ी'** जैसी सामान्य आकृति बनी होती थी।

Description	Obverse	Reverse
Rudrasimha I, 180-196 AD		
Viradaman, 234-238 AD		

Coins of the Western Kshatrapas

- **गुप्तकालीन सिक्के:**
  - गुप्तकालीन सिक्का-ढलाई (**300-550 ई.) महत्त्वपूर्ण हिंदू पुनरुत्थान** और **कलात्मक उत्कृष्टता** की अवधि का प्रतिनिधित्व करता है।

- मुख्यतः **सोने से बने** तथा कभी-कभी **चाँदी और ताँबे से बने गुप्त सिक्के अपनी विविधता और जटिल आकृति** के लिये प्रसिद्ध हैं।
- **चंद्रगुप्त द्वितीय** द्वारा पश्चिमी क्षत्रपों को पराजित करने के बाद चाँदी के सिक्के सामने आए।
- गुप्तकालीन स्वर्ण सिक्कों में आमतौर पर **एक तरफ राजा को दर्शाया जाता था, जो विभिन्न भूमिकाओं में चित्रित होते थे** , जैसे कि प्रसाद चढ़ाते हुए, वीणा बजाते हुए, अश्वमेध यज्ञ करते हुए, जानवरों की सवारी करते हुए या जंगली जानवरों का वध करते हुए। **पीछे की तरफ अक्सर देवी लक्ष्मी को** सिंहासन या कमल पर बैठे हुए या कभी-कभी खुद रानी को दर्शाया जाता था।
- **संस्कृत भाषा** में उत्कीर्ण ये अभिलेख **भारतीय सिक्कों पर संस्कृत भाषा के प्रथम प्रयोग को दर्शाते हैं** ।
- इन सिक्कों पर राजवंशीय उत्तराधिकार, विवाह गठबंधन और शाही उपलब्धियों जैसी **महत्त्वपूर्ण घटनाओं का भी स्मरण किया जाता था** ।

Description	Obverse	Reverse
King as Horseman		
King as Lion Slayer		
King & Queen Type		
Fan-Tailed Peacock		

- **गुप्तोत्तर काल के सिक्के:**
  - गुप्तोत्तर सिक्का-ढलाई (6वीं-12वीं शताब्दी ई.) एक ऐसी अवधि थी जिसमें कलात्मक नवाचार की कमी थी और इसे मुख्य रूप से **सरल राजवंशीय मुद्राओं की विशेषता** प्राप्त थी।
  - उल्लेखनीय उदाहरणों में **हर्ष** (7वीं शताब्दी ई.), त्रिपुरी के **कलचुरी** (11वीं शताब्दी ई.) और प्रारंभिक मध्ययुगीन **राजपूत वंश** (9वीं-12वीं शताब्दी ई.) के सिक्के शामिल हैं।
  - **इस अवधि के दौरान सोने के सिक्के दुर्लभ थे,** कलचुरी राजवंश के **गंगेयदेव के** शासनकाल में इनका पुनरुद्धार देखा गया, जिन्होंने **'बैठी हुए लक्ष्मी के सिक्के' जारी किये,** जिनका बाद में अन्य शासकों ने **सोने और अवमूल्यन दोनों रूपों में अनुकरण किया।**
  - राजपूत वंशों ने अक्सर अपने सिक्कों पर **बैल और घुड़सवार की आकृति अंकित की।**
  - पश्चिमी भारत में, **पूर्वी रोमन साम्राज्य के साथ व्यापारिक संबंधों के कारण आयातित बीजान्टिन सोलिडी** का उपयोग होने लगा, जिससे उस समय की आर्थिक अंतर्क्रियाओं पर प्रकाश पड़ा।

Description	Obverse	Reverse
Seated Lakshmi		
Bull & Horseman		

प्राचीन दक्षिण भारत में सिक्कों की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं?

- **चालुक्य सिक्के:**
- पश्चिमी चालुक्य सिक्कों **(6वीं-12वीं शताब्दी ई.) में एक ओर पुराने कन्नड में किंवदंतियों के साथ मंदिर या सिंह अंकित थे, जबकि पीछे की ओर खाली जगह थी।**
- पूर्वी चालुक्य सिक्कों **(7वीं-11वीं शताब्दी ई.) में बीच में एक सूअर का चिह्न बना होता था जिसके चारों ओर राजा का नाम अंकित होता था और पीछे का भाग भी खाली होता था। ये सिक्के क्षेत्रीय पहचान एवं प्रशासनिक प्रथाओं को दर्शाते थे।**

- चोल सिक्के:

  - **चोल साम्राज्य, जिसने 10वीं से 13वीं शताब्दी तक** दक्षिणी भारत पर प्रभुत्व स्थापित किया, **ने राजराजा महान, राजेंद्र चोल** और **राजेंद्र कुलोथुंगा प्रथम** जैसे प्रमुख सम्राटों के शासनकाल के दौरान विभिन्न प्रकार के सिक्के जारी किये।
  - सामान्य चोल सिक्कों में **एक ओर खड़े राजा तथा दूसरी ओर बैठी हुई देवी की तस्वीर होती है** तथा उन पर **संस्कृत में अभिलेख अंकित होते हैं।**
  - **राजेंद्र चोल के सिक्कों पर बाघ और मछली के प्रतीक** के साथ **"श्री राजेंद्र" या " गंगईकोंडा चोल"** भी अंकित है ।
  - कुलोथुंगा प्रथम के कुछ सिक्कों में बीच में **बाघ, दोनों ओर मछली और धनुष के चिह्न अंकित हैं तथा उन पर "कटाइकोंडा चोल"** या **" मलैनाडुकोंडा चोल"** जैसी किंवदंतियाँ भी अंकित हैं ।

Coins of the Cholas 9th - 13th Centuries		

- **पांड्य सिक्के:**
  - 7वीं शताब्दी में प्रचलित पांड्य सिक्कों में प्रारंभिक **आकृतियों** में **एक ओर हाथी की आकृति और दूसरी ओर** खाली स्थान होता था, जो आमतौर पर चौकोर आकार के सिक्कों पर अंकित किया जाता था।
  - 7वीं और 10वीं शताब्दी के बीच, पांड्य सिक्कों पर **मछली का प्रतीक** प्रमुख हो गया, कभी-कभी अन्य प्रतीकों जैसे **चोल खड़ी आकृति या चालुक्य सूअर के साथ भी।**
  - **चाँदी और सोने के सिक्कों** पर अभिलेख **संस्कृत** में थे, जबकि **ताँबे के सिक्कों पर आमतौर पर तमिल किंवदंतियाँ अंकित होती थीं** ।
  - पांड्य, जो पहले **पल्लवों** और बाद में **चोलों के अधीन थे**, पतन से पहले 13वीं शताब्दी में पुनः प्रमुखता प्राप्त कर ली।
- **चेरस:**

Coins of the Cheras 11th - 13th Centuries		
Coins of the Cheras 11th - 13th Centuries		

- **उडुपी के अलुपास और देवगरि के यादव:**
  - उडुपी के अलुपास में **मछली का राजवंशीय प्रतीक था (पांड्य के समान)**
  - देवगरि के यादवों ने **'पद्मातंक' जारी कयि** जनिके अग्र भाग पर आठ पंखुड़ियों वाला कमल बना था तथा पृष्ठ भाग खाली था।
  - सक्कों पर आमतौर पर **जारीकर्त्ता के नाम या उपाधियाँ स्थानीय लपि में अंकति होती थीं**।
  - सजावटी तत्त्व सीमति थे और देवताओं का चत्रिण केवल बाद में, [वजियनगर काल](#) (14वीं-16वीं शताब्दी ई.) के दौरान दखिाई देने लगा।

Coins of the Alupas of Udipi 11th - 13th Centuries		
Padmatankas, Coins of the Yadavas of Devagiri 12th - 14th Centuries		

- **वदिेशी सक्के:**
  - **प्राचीन भारत के मध्य पूर्व, यूरोप (ग्रीस और रोम) के** साथ-साथ **चीन के साथ भी** काफी व्यापारकि संबंध थे । यह व्यापार आंशकि रूप से भूमि मार्ग से होता था, जसि बाद में [रेशम मार्ग](#) रूप में जाना गया और आंशकि रूप से समुद्री मार्ग के माध्यम से संचालति होता था।
  - दक्षणि भारत में, जहाँ समुद्री व्यापार बहुत फल-फूल रहा था, [रोमन सक्के](#) भी अपने मूल रूप में प्रचलन में थे, यद्यपि कभी-कभी वदिेशी संप्रभुता के अतक्रिमण को अस्वीकार करने के लयि सक्के की लंबाई कम कर दी जाती थी।

Description	Obverse	Reverse
Roman Find in South India		
Roman Find in South India		
Byzantine Find in South India		

दिल्ली सल्तनत के सिक्कों की प्रमुख विशेषताएँ क्या थीं?

- **मध्यकालीन भारतीय सिक्कों का विकास:**
- **मध्यकालीन भारतीय सिक्कों की ढलाई में सिध पर अरबों की विजय (712 ई.) और 13वीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ बदलाव आया।**
- **प्राचीन सिक्कों की पारंपरिक चित्रात्मक आकृति का स्थान इस्लामी शैली ने ले लिया, जिसकी विशेषता यह थी कि सिक्कों के दोनों ओर अरबी लिपि में अभिलेख अंकित थे।**

- ये सिक्के अपने प्राचीन समकक्षों की तुलना में अधिक विस्तृत जानकारी प्रदान करते थे तथा धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष दोनों पहलुओं के बारे में जानकारी देते थे।

  दिल्ली सल्तनत (1206-1526) ने टंका (सोना/चाँदी) और जित्तल (ताँबा) के साथ मानकीकृत मुद्रा को अपनाया, जिससे मुद्रा अर्थव्यवस्था का विस्तार हुआ।

  सिक्कों पर भव्य उपाधियाँ अंकित होती थीं (जैसे- अलाउद्दीन खिलजी को सिकंदर अल सानी कहा जाता था) और टकसालों का सम्मान होता था, जो राजनीतिक अधिकार, आर्थिक विकास और इस्लामी प्रभाव को दर्शाता था।

  - **अलाउद्दीन खिलज़ी (1296-1316 ई.)** पहला भारतीय शासक बना जिसने अपने सिक्कों पर अब्बासिद खलीफा का नाम हटा दिया और इसके स्थान पर स्वयं को **यामीन-उल-खिलाफत** (खलीफा का दाहिना हाथ) कहने लगा।
    - **उन्होंने सिकंदर-उस-सानी** (द्वितीय सिकंदर) की उपाधि भी धारण की, जो सिकंदर की विरासत के प्रति उनकी जागरूकता और महानता में उनके उत्तराधिकारी के रूप में पहचाने जाने की उनकी इच्छा को दर्शाता है।

- **अलाउद्दीन खिलज़ी** के उत्तराधिकारी **कुतुबुद्दीन मुबारक (1316-1320 ई.) ने सोने, चाँदी, बिलियन और ताँबे** के सिक्के जारी किये।

- उन्होंने अब्बासिद खलीफा का नाम त्यागकर तथा स्वयं को **खलीफुल्लाह (अल्लाह का खलीफा)** और **खलीफा रब्बिल अलेमीन** (विश्व के प्रभु का खलीफा) घोषित करके एक महत्त्वपूर्ण बदलाव किया।
- **उन्होंने अपनी सत्ता और महत्त्वाकांक्षा को प्रदर्शित करते हुए सिकंदर-उज़-ज़मान** (युग का सिकंदर) की उपाधि भी धारण की।
- **मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351 ई.) ने** **कांस्य मुद्रा** प्रचलित की, जिसका वज़न लगभग 10 ग्राम था, जिसे चाँदी के टंका के मूल्य पर स्वीकार किया जाता था।
- सिक्कों पर कुछ इस तरह के अभिलेख अंकित थे, **"जो राजा की आज्ञा का पालन करता है, वह ईश्वर की आज्ञा का पालन करता है"** और **"मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में प्रचलित टंका के रूप में मुहरबंद, आशावान दास।"** यह एक महत्त्वाकांक्षी लेकिन अंततः असफल मौद्रिक प्रयोग था।

- लोदी वंश के संस्थापक **बहलोल लोदी (1451-1459 ई.) ने** **सोने और चाँदी के सिक्कों प्रचलन बंद कर दिया, लेकिन अपने शासनकाल के दौरान अरबों** और **ताँबे के सिक्के** जारी करना जारी रखा। लोदी वंश ने 1526 तक शासन किया, जब **इब्राहिम लोदी को बाबर** ने पराजित कर दिया।
- **शेरशाह (1538-1540 ई.) ने** **रुपया** लगभग 11.5 ग्राम (11.2 से 11.6 ग्राम तक) वज़न वाले **चाँदी के सिक्के** के रूप में चलाया और आंशिक सिक्के भी जारी किये।
  - उन्होंने अपने सिक्कों पर **देवनागरी किंवदंती को** पुनः शुरू किया और अपना नाम **श्री सेर साही अंकित किया**।
  - उन्होंने **अरबों सिक्कों को समाप्त कर दिया** और **भारी ताँबे के सिक्के जारी किये, जिन्हें** संभवतः **पैसा** कहा जाता था। इन सिक्कों का वज़न लगभग **20 ग्राम था**, इसके अलावा आंशिक मूल्य के सिक्के भी प्रचलन में लाए गए।

विजयनगर साम्राज्य के सिक्कों की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं?

- विजयनगर **साम्राज्य ने सोने, चाँदी, ताँबे और बिलियन सिक्कों** सहित विभिन्न प्रकार के सिक्के जारी किये, जो इसकी अपार संपदा को दर्शाते हैं।
- पगोड़ा सबसे ऊँचे मूल्य का था, जबकि **सोने के फनाम**, **चाँदी के तरास** और **ताँबे के सिक्कों का** उपयोग रोजमर्रा के लेन-देन के लिये किया जाता था।
- प्रारंभिक सिक्के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से ढाले गए थे, जैसे- **बरकुर गद्यान** और **भटकल गद्यान**।
- **हरिहर प्रथम और बुक्का** ने सोने के फणम और चाँदी के तारास ढाले, जबकि **हरिहर द्वितीय ने** **ब्रह्मा**, **विष्णु** और **शिव** सहित हिंदू देवताओं की मूर्तियों को **शिवालयों पर स्थापित किया**।
- **देवराय प्रथम** और **देवराय द्वितीय ने** इन प्रथाओं को जारी रखा और **ताँबे के सिक्के** तथा **चाँदी के तारस ढाले**, जिन पर **हाथी** एवं **खंजर के प्रतीक अंकित थे।**

- तुलुव राजवंश के तहत, कृष्णदेवराय ने **बैठे हुए बालकृष्ण की आकृति** और उच्च मूल्य वाले ताँबे के सिक्के जारी किये, जबकि **अच्युत राय ने गंडाबेरुंडा** (दो सिर वाले ईगल) वाले सिक्के जारी किये।
- सदाशिव राय ने भी इसी प्रकार के सिक्के जारी रखे, जबकि **राम राय ने** ताँबे के सिक्कों पर ध्यान केंद्रित किया।
- अरविडु राजवंश ने **सोने और ताँबे के सिक्के जारी किये, जो अक्सर भगवान वेंकटेश्वर** के नाम पर थे, जिसके अग्र भाग पर **तिरुमलराय ने राम, लक्ष्मण और सीता का** चित्रण किया था। ये सिक्के समय के साथ साम्राज्य के राजनीतिक और धार्मिक विकास को दर्शाते हैं।

मुगल साम्राज्य के सिक्कों की प्रमुख विशेषताएँ क्या थीं?

- **मुगल सिक्का-निर्माण के चरण:**
  - मुगल साम्राज्य, **जिसने तीन शताब्दियों से अधिक समय तक दक्षिण एशिया के अधिकांश भाग पर शासन किया था, की अर्थव्यवस्था मज़बूत थी तथा उसे सोने, चाँदी और ताँबे की स्थिर सिक्का प्रणाली का समर्थन प्राप्त था।**
  - मुगल सिक्का-निर्माण **चार अलग-अलग चरणों से गुज़रा:**
    - बाबर और हुमायूँ के अधीन **भ्रमणशील या क्षेत्रीय चरण (1526-1556)**
    - अकबर, जहाँगीर , शाहजहाँ और औरंगज़ेब जैसे सम्राटों के अधीन **शास्त्रीय चरण (1556-1707)**
    - **पतनशील चरण (1707-1720),** आंतरिक अस्थिरता और कमज़ोर शासकों द्वारा चिह्नित
    - **अर्द्ध-मुगल चरण (1720-1835),** जिसके दौरान क्षेत्रीय शक्तियों और बाहरी ताकतों, जैसे- मराठा , **सिख, राजपूत,** फ्राँसीसी और अंग्रेज़ों ने मुगल सम्राट के नाम पर सिक्के जारी किये।
      - ये सिक्के प्रायः सम्राट की नाममात्र सहमति से जारी किये जाते थे, जो साम्राज्य के विशाल प्रभाव और आर्थिक संरचना को दर्शाते थे।
  - मुगल साम्राज्य के संस्थापक **बाबर ने** अपने पूरे शासनकाल में **पारंपरिक तैमूरिद मुद्रा, शाहरुखी** जारी की।
    - **तैमूर के बेटे शाहरुख मिर्ज़ा के** नाम पर जारी इन चाँदी के सिक्कों के अग्र भाग पर सुन्नी कलमा और पीछे की ओर राजा का इस्लामी नाम, उपाधि, तारीख और टकसाल का नाम अंकित था।
    - अपने **सैन्य अभियानों** और स्थानांतरण के बावजूद, बाबर ने 1530 ई. में अपनी मृत्यु तक **तैमूर सिक्का प्रणाली को जारी रखा।**

Silver Shahrukhi issued by Babur from the Badakshah mint

- **हुमायूँ ने** अपने शासनकाल के पहले तीन वर्षों तक **शाहरुखी सिक्का** जारी रखा ।
  - **शेरशाह सूरी** द्वारा पदच्युत किये जाने के बाद हुमायूँ को **फारस** निर्वासित कर दिया गया, जहाँ उसने कुछ सिक्कों पर **शिया कलमा अंकित करवाई।**
  - निर्वासन में हुमायूँ ने **कंधार से सिक्के जारी किये**, जिसमें **शाह तहमास्प** को अपना अधिपति माना गया।
  - **शेरशाह सूरी ने रुपैया** (आधुनिक रुपया) और ताँबे का **पैसा** प्रचलित किया, जिससे द्विधातु मुद्रा प्रणाली (सिल्वर और कॉपर) को मज़बूती मिली।

Silver Shahrukhi issued by Humayun from the Delhi mint

- **अकबर ने शेरशाह की मुद्रा प्रणाली को** अपनाया, शाहरुखी के स्थान पर **रुपैया** चलाया **और** सोने **के सिक्के (मोहर)** तथा **त्रिधातु मुद्रा** (सोना, चाँदी, ताँबा) प्रचलित की।
  - उन्होंने **भारी मोहर** (10-12 रुपए मूल्य के) प्रचलित किये तथा **वर्गाकार** और **बहुकोणीय सिक्कों** (मेहरबी) के साथ प्रयोग किया।
  - अकबर ने **सोने और चाँदी की** गुणवत्ता को परिष्कृत किया तथा सिक्का निर्माण में उच्च मानकों को लागू किया। **सुलेख शैली को बढ़ावा देने विशेषज्ञ उत्कीर्णकों को नियुक्त किया,** जिससे सिक्कों कीआकृति अधिक कलात्मक और सुंदर बनी।
  - **सिक्के आगरा, दिल्ली, अहमदाबाद, लाहौर** और अन्य शहरों में ढाले गए ।
  - अकबर ने **सोने की बड़ी मोहर** (1000 तोला, लगभग 12 किलोग्राम तक) जारी की और उनके शासनकाल में **दीन-ए-इलाही** सिक्कों का निर्माण हुआ।
  - उनके सिक्कों पर 1585 ई. तक **सुन्नी कलमा अंकित था**, जिसके बाद उन्होंने **दीन-ए-इलाही** शिलालेख और तिथि निर्धारण के लिये एक नया **इलाही युग शुरू किया।**
  - उन्होंने सिक्कों पर **फारसी कविता** के प्रयोग को भी लोकप्रिय बनाया।

One-tenth gold mohur issued by Akbar

Copper daam issued by Akbar from the Bhakkar mint

- अकबर के उत्तराधिकारी **जहाँगीर ने** सिक्कों की ढलाई में नवीनता दिखाई तथा उन्होंने सिक्कों पर अपने पिता के **यथार्थवादी चित्र और तारीखों को दर्शाने के लिये राशि चिह्न अंकित किये।**
  - अकबर ने पारंपरिक धार्मिक मानदंडों को चुनौती देते हुए कुछ विशिष्ट सिक्के जारी किए, जिन पर उसका स्वयं का चित्र अंकित था। इनमें से कुछ सिक्कों में उसे **शराब का प्याला पकड़े हुए** दर्शाया गया, जो उस समय की इस्लामिक परंपराओं से हटकर था।
  - **जहाँगीर ने सिक्कों पर झिरी युग** के प्रयोग को आंशिक रूप से पुनः शुरू किया तथा उनमें से कई पर **काव्यात्मक छंद भी शामिल किये।**
  - उन्होंने अपनी पत्नी **नूरजहाँ को सिक्के जारी करने का अधिकार दिया**, जिससे वह रजिया सुल्तान के बाद ऐसा करने वाली पहली रानी बनीं।

Zodiac coin (Taurus) issued by Jahangir

- **शाहजहाँ ने** अपने सिक्कों पर **कलमा को** पुनः प्रचलित किया तथा तैमूर की उपाधि की प्रतिध्वनि करते हुए **'साहिब-ए-किरान सानी'** (भाग्यशाली खगोलीय संयोजनों का दूसरा स्वामी) की उपाधि का प्रयोग किया।
- **शाहजहाँ ने जहाँगीर द्वारा जारी किए गए चित्रयुक्त सिक्कों** और राशि चक्र (ज़ोडियैक) सिक्कों को पिघलाने का आदेश दिया, ताकि रूढ़िवादी इस्लामी पादरियों को संतुष्ट किया जा सके। ये सिक्के जहाँगीर की धार्मिक सहिष्णुता और कलात्मक रुचि को दर्शाते थे, शाहजहाँ के इस आदेश के कारण ये सिक्के बेहद दुर्लभ हो गए, और जो कुछ ही नमूने बच पाए, वे आज ऐतिहासिक रूप से अत्यंत मूल्यवान और संग्रहणीय बन चुके हैं।

Silver mishqal issued by Shah Jahan—this denomination was discontinued during his reign

- **औरंगज़ेब ने** अविश्वासियों द्वारा सिक्कों को अपवित्र करने से रोकने के लिये उनसे **कलिमा** हटा दिया ।
  - उनके सिक्कों पर उनके शासन की प्रशंसा करते हुए एक **काव्यात्मक छंद और टकसाल के स्थान** और **शासन वर्ष को इंगित करने वाला एक सूत्र अंकित था** ।
  - इससे सिक्के-निर्माण की आकृति अधिक सादगीपूर्ण और मानकीकृत हो गई तथा सुलेखकों के लिए रचनात्मक अवसर सीमित हो गए।

- **मुगलों का पतन**
  - **औरंगज़ेब की मृत्यु (1707) ई.** के बाद, क्षेत्रीय शक्तियों और **ईस्ट इंडिया कंपनी** जैसी विदेशी संस्थाओं ने सिक्का ढालने के अधिकार हासिल करना शुरू कर दिया, जिससे सिक्कों पर मुगल नियंत्रण कमज़ोर हो गया।
  - **फर्रुखसियर ने सिक्का ढालने के अधिकार के लिये फरमान (फरमान)** जारी करने की प्रथा शुरू की, जिससे ईस्ट इंडिया कंपनी को **बंबई में सिक्के ढालने का अधिकार मिल गया** (1717)।
  - **मुहम्मद शाह के शासनकाल** के दौरान टकसाल अधिकारों में गिरावट तेज़ हो गई, जो नादिर शाह (1739) के **फारसी आक्रमण और हैदराबाद के निज़ाम** तथा **अवध के नवाब** जैसी क्षेत्रीय शक्तियों के उदय से चिह्नित है, जिन्होंने अपने स्वयं के सिक्के जारी किये।
  - **बक्सर के युद्ध (1764)** ई. में **शाह आलम द्वितीय** की **हार** के बाद मुगल सत्ता समाप्त हो गई, जिसके परिणामस्वरूप 1803 ई. में दिल्ली पर ब्रिटिश नियंत्रण स्थापित हो गया और अंततः 1835 ई. में सिक्कों पर मुगल नामों के स्थान पर ब्रिटिश सम्राट का नाम अंकित कर दिया गया।
  - अंतिम मुगल सम्राट **बहादुर शाह ज़फर ने 1857 ई. के विद्रोह** के दौरान सिक्के जारी किये, लेकिन अंग्रेज़ों ने उन्हें निर्वासित कर दिया, जिससे **मुगल सिक्का-प्रचलन का अंत हो गया।**

दृष्टि The Vision

One-tenth silver rupee issued by the East India Company in the name of Alamgir II from Tellicherry mint

सिक्का अधिनियम, 2011

- **सिक्का अधिनियम, 2011** , जिसने **1906 ई. के सिक्का अधिनियम को प्रतिस्थापित किया** , के अनुसार सिक्का किसी भी धातु या अन्य भौतिक वस्तु को कहा जाता है **जिस पर सरकार या उसकी अधिकृत इकाई द्वारा मुहर लगाई जाती है।**
- **यह अधिनियम केंद्र सरकार को विभिन्न मूल्यवर्ग के सिक्के डिजाइन करने और ढालने का अधिकार देता है, जबकि भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) की भूमिका केंद्र सरकार से आपूर्ति के आधार पर वितरण तक सीमित है।**
- **सरकार RBI के अनुरोध के आधार पर वार्षिक खनन मात्रा निर्धारित करती है।**

- सिक्के मुंबई, हैदराबाद, कोलकाता और नोएडा स्थित चार सरकारी प्रतिष्ठानों में ढाले जाते हैं।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2021)

1. भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) के गवर्नर की नियुक्ति केंद्र सरकार द्वारा की जाती है।
2. भारत के संविधान में कुछ प्रावधान केंद्र सरकार को जनहित में RBI को निर्देश जारी करने का अधिकार देते हैं।
3. RBI के गवर्नर भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम से अपनी शक्ति प्राप्त करते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

A. केवल 1 और 2
B. केवल 2 और 3
C. केवल 1 और 3
D. 1, 2 और 3

उत्तर: C

?????

प्रश्न. आप इस विचार को कि गुप्तकालीन सिक्का शास्त्रीय कला की उत्कृष्टता का स्तर बाद के समय में देखने को नहीं मिलता, किस प्रकार सिद्ध करेंगे?(2017)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/indian-coinage-from-ancient-to-medieval-period